M.A. IVth Sem

विषय : प्रश्न ज्योतिष यूनिट III

By Deepti Tyagi

प्रश्न : प्रश्न विचार के सामान्य नियम बतलाइए ?

उत्तर : ताजिक तथा जातक प्रश्न विचार करने लिए सबसे पहले चन्द्रमा कुंडली लग्न कुंडली, नवांश कुंडली तीनो के फल पर विचर करना चाहिए | जिसके निम्न फल विचार के सूत्र निम्न है |

1 लग्नेश लग्न को व कार्येश कार्यस्थान को देखे |
2 लग्नेश कार्यस्थान को व कार्येश लग्न को देखे |
3 लग्नेश कार्येश को व कार्येश लग्नेश को देखे |

इन सब योगो में यदि चन्द्रमा की भी दृष्टि इन पर होतो पूर्ण सफलता होती है |

इन सभी योगो में यदि लग्न पर शुभ दृष्टि हो तो पूर्ण सफलता मिलती है | शुभ दृष्टि न हो तो 25% सफलता होती हैं | यदि कार्यसिद्धि योगों में यदि केवल लग्नेश को शुभ ग्रह देखे तो 50% सफलता मिलती है | और यदि कोई एक बलवान शुभ ग्रह यदि लग्नेश को देखे तो 75% सफलता होती है |

अन्य कार्य सिद्धि योग :

•लग्नेश व अष्टमेश दोनों अष्टम भाव में एक ही द्रेष्काण में होतो ऐसे प्रश्न लग्न में लाभ होता है अथवा कार्यसिद्धि होती है |

•प्रश्न लग्न में शुभ ग्रहों के वर्ग अधिक हो तो उस समय जो प्रश्न किया गया हो उसमे सफलता मिलता है |

•लग्नेश व लाभेश का योग या सम्बन्ध हो तो लाभदायक होता है | किसी प्रश्न में 9, 10 भावेशों का सम्बन्ध हो या 10, 12, 8, 11 भावेशों की योग दृष्टि हो तो कार्य सिद्धि मिलती है |

प्रश्न : कार्य सिद्धि का समय कैसे ज्ञात करेगे ?

उत्तर : कार्य सिद्धि का समय निम्न विधि द्वारा ज्ञात किया जाता है |
1 प्रश्न लग्न की स्पष्ट कला बनाते है | फिर उसको 12 अंगुल के शंकु की छाया से गुणा करते है |
2 गुणनफल को 2 अलग अलग रखते है
3 एक स्थान पर रखे गुणनफल 7 से भाग देकर जो शेष बचे वह ग्रह की क्रम संख्या होगी जैसे 1 शेष हो तो सूर्य, 2 शेष से चंद्रमा इत्यादि |
4 जो शेष ग्रह संख्या बचे उसमे उसके गुणक से गुणा करे | इसको पुनः 7 से भाग दे | जो शेष आये वह उदित ग्रह होगा | यदि शुभ ग्रह का उदय हो तो कार्य सिद्धि व पाप ग्रह का उदय हो तो कार्य की हानि होती है |
5 इसके बाद दूसरे स्थान पर रखी संख्या में 71 का भाग देते है | जो शेष बचे उसमे सूर्यादि ग्रहों के गुणको को घटाएं जब तक कि न घटे | जिस ग्रह का घटक नहीं घटता उस ग्रह के गुणक के संख्या के बराबर दिन में कार्य की सिद्धि होती है |

प्रश्न : मूक प्रश्न ज्ञान किस प्रकार किया जाता है |

उत्तर : मूक प्रश्न अर्थात धातु, मूल या जीव में से किससे सम्बंधित है निम्न द्वारा ज्ञात कर सकते है |

(1) यदि लग्न में अपने नवांश में स्थित कोई ग्रह यदि त्रिकोण भव में होकर अपने नवांश को देखता हो तो धातु से सम्बंधित प्रश्न होता है |

या विषम राशि लग्न में चर नवांश में हो या प्रश्न लग्न में केन्द्र में बलवान सूर्य, मंगल हो या 1, 5, 8 लग्न में मंगल, सूर्य की दृष्टि या योग होतो धातु से सम्बंधित प्रश्न होते है |

(2) लग्न में दुसरे ग्रह के नवांश में स्थित होकर त्रिकोण में स्थित ग्रह अपने ही नवांश में हो तो जीव सम्बन्धी प्रश्न होते है या विषम राशि लग्न में द्विस्वभाव नवांश में हो या प्रश्न लग्न में केन्द्र में बलवान चन्द्र, गुरु, शुक हो या 2,4,5,7,9,12 लग्नों में चन्द्र, गुरु, शुक की दृष्टि या योग हो लग्न पर वृहस्पति की दृष्टि होतो जीव से सम्बंधित प्रश्न होते है |

(3) लग्न में परकीय नवांश में स्थित होकर त्रिकोण में स्थित ग्रह अपने ही नवांश में हो तो मूल सम्बन्धी प्रश्न होते है या विषम राशि लग्न में स्थिर नवांश में हो या प्रश्न लग्न में केन्द्र में बलवान बुध, शनि हो या 3, 6, 11 लग्नों में बुध, शनि की दृष्टि या योग हो लग्न पर वृहस्पति की दृष्टि होतो मूल से सम्बंधित प्रश्न होते है |

प्रश्न : प्रश्न से तेजी-मंदी का विचार किस प्रकार किया जाता है |

उत्तर : प्रश्न समय में 1,2,3 राशियों में सूर्य हो और शुभयुक्त हो तो गर्मी में आने वाली फसलों के भाव बढ़ते है | 9, 10, 11 राशि में सूर्य हो और शुभयुक्त हो तो सर्दी में आने वाली फसलों के भाव बढ़ते है |

प्रश्न लग्न बलवान हो, लग्नेश या शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, केंद्र में शुभ ग्रह हो तो तेजी या मंदी न हो कर औसत स्थिति बनी रहती है | यदि केंद्र में निर्बल पाप ग्रह हो तो भी औसत स्थिति बनी रहती है |

प्रश्न : प्रश्न ज्योतिष के अनुसार चोर की पहचान तथा चोरी की गई वस्तु से सम्बन्धित क्या योग है बताइयेगा ?

चोर की पहचान : 1,7, 10 भाव में कोई उच्चया स्वक्षेत्री न हो तो सप्तमेश के अनुसार चोर के सहायक या मुख्य चोर का स्वरुप पता चलता है | यदि उपरोक्त भावो में कही पर सूर्य हो और नीच में हो तो भी व्यक्ति के पिता को चोरी में सहायक होता है | नीच चन्द्रमा से माता, नीचगत शुक्र से पत्नी, नीचस्थ शनि से पुत्र तथा गुरु नीच होतो घर का मुखिया या बुजुर्ग ही चोर होता है | यदि मंगल नीच में होतो पुत्र या भाई चोर होता है | नीच बुध होतो अपना कोई मित्र या निकटवर्ती व्यक्ति चोर होतो है |

चोर किस उम्र का होगा : सप्तमेश शुक्र होतो चोर युवक, बुध होतो बालक या किशोर, गुरु होतो मध्यावस्था वाला व्यक्ति, मंगल होतो युवा व् प्रोढ़ावस्था के बीच का, शनि हो तो वृद्ध और सूर्य हो तो बहुत अधित उम्र का व्यक्ति चोर होता है |

चोर स्त्री या पुरुष का ज्ञान : सप्तमेश यदि स्त्री राशि में हो, स्वयं स्त्री ग्रह हो या स्त्री ग्रह से दृष्ट हो तो स्त्री चोर होती है | सप्तमेश यदि पुरुष राशि में हो, स्वयं पुरुष ग्रह हो या पुरुष ग्रह से दृष्ट हो तो पुरुष चोर होता है |

चोरी का माल कहाँ छिपाया है : यदि सप्तमेश गुरु हो और चन्द्रदृष्ट हो तो चोर लोगो को देखकर या लोगो के जाग जाने से माल आसपास ही छोड़कर भाग जाता है | मंगल सप्तमेश हो तो हो और चन्द्रदृष्ट हो तो चोर माल को जमीन में दबा दिया जाता है | शुक्र सप्तमेश हो तो हो और चन्द्रदृष्ट हो तो माल उसने अपने कपड़ों में भीतर छुपा रखा है | बुध सप्तमेश हो तो हो और चन्द्रदृष्ट हो तो चोर कोई मेहमान या आगन्तुक होता है |

प्रश्न : प्रश्न ज्योतिष के अनुसार संतान से सम्बंधित प्रश्न के योग बतलाइए |

उत्तर : संतान से सम्बंधित प्रश्न के योग निम्नलिखित है |
(1) यदि पंचमेश का लग्नेश या चन्द्रमा से इत्थसाल हो और वह शुभ ग्रहों से युत या दृष्ट हो तो संतान की प्राप्ति निश्चित होती है |
(2) संतान पुत्र होगी या कन्या : (अ) प्रश्न लग्न से पंचम स्थान को जितने बलवान ग्रह देखते हो, उतनी ही सन्तान होती है | पुरुषग्रहों से पुत्र संख्या व स्त्रीग्रह से कन्या संख्या होती है |
(आ) पंचमेश व लग्नेश यदि किसी विषम राशि या विषम भाव में हो तो पुत्र तथा विषम राशि या विषम भाव में हो तो कन्या होती है |
(इ) पंचमेश व लग्नेश यदि पुरुष राशि में हो अथवा इन पर पुरुष ग्रहों की दृष्टि हो तो पुत्र का योग होता है } यदि इसके विपरीत स्थिति हो तो कन्या का योग होता है |

(3) संतान हानि का योग : (अ) लग्नेश व पंचमेश की दृष्टि न हो, पंचम तथा लग्न पर भी किसी ग्रह की दृष्टि न हो, पंचमेश व लग्नेश पाप ग्रह से इत्थशाल करे तो संतान नही होती या होकर नष्ट हो जाती है |
(आ) प्रश्न लग्न या जन्म लग्न से पंचम में 2,5,6,8 राशियाँ हो या पंचम भाव पाप युक्त दृष्ट हो तो जातक के कम संतान होती है|
(इ) शनि या सूर्य अष्टम मे अपनी राशि में हो कोई एक अष्टम में कोई स्वक्षेत्री हो और दूसरा ग्रह भी साथ जातक को संतान नहीं होती है |
(ई) अष्टम में गुरु व शुक्र हो तो संतान होकर मर जाती है तथा अष्टम में मंगल होतो गर्भस्राव होता है |
(उ) चन्द्र व बुध अष्टम में होतो संतान नहीं होती है | यदि होतो पुत्री होती है |
(ऊ) अष्टम में सूर्य शुक्र साथ हो या 2, 12, 8 भावों में पाप ग्रह हो तो दोनों योगो में संतान शुरू-शुरू में होकर नष्ट होती है बाद में अच्छी संतान नहीं पैदा होती है |